प्रातः क्लास 19/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। तुम जब अपने2 गांव से निकलते हो तो यह बुद्धि में रहता है कि हम जाते हैं शिवबाबा के पाठशाला में। ऐसे नहीं कि कोई साधु–सन्त आदि का दर्शन करने वा शास्त्र आदि सुनने आते हो। तुम जानते हो हम जाते हैं शिवबाबा के पास। दुनिया के मनुष्य तो समझते हैं शिव ऊपर में रहते हैं। वह जब याद करते हैं तो आँखें खोलकर नहीं बैठते। वह आँखें बन्द कर ध्यान में बैठते हैं। शिवलिंग जो देखा हुआ है उसकी याद में बैठते हैं जो–जो भी शिव के पुजारी हैं। अभी तो अनेकानेक को याद करते रहते हैं। भल शिव के मंदिर में जावेंगे तो भी शिवबाबा को याद करेंगे तो ऊपर में देखेंगे वा मंदिर याद आवेगा। आँखें बन्द कर बैठते हैं। समझाते हैं दृष्टि कहाँ भी नाम–रूप में जावेगा तो हमारी याद टूट जावेगी। अभी तुम बच्चे जानते हो भल हम शिवबाबा को याद करते थे, कोई कृष्ण को याद करते थे, कोई राम को याद करते थे, कोई अपने गुरु को याद करते थे। गुरु का भी छोटा लॉकेट बनाकर पहनते थे। भक्तिमार्ग में तो सभी ऐसे ही हैं। घर बैठे भी याद करते हैं। फिर उनकी याद में यात्रा करने भी जाते हैं। चित्र तो घर में भी रख पूजा कर सकते हैं ना; परन्तु यह भी भक्ति के रसम–रिवाज़ पूरे हुए। जन्म–जन्मान्तर यात्राओं पर जाते हैं, चारो धाम की यात्रा करते हैं। चार धाम क्यों कहते हैं? वेस्ट..... ईस्ट चारों का चक्र लगाते हैं। भक्तिमार्ग जब शुरू होता है तो पहले एक की भक्ति (की)जाती थी। इसको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति। सतोप्र0 थे। अभी तो इस समय में तमोप्रधान हैं। भक्ति भी व्यभिचारी। अनेकानेक को याद करते रहते हैं। तमोप्रधान 5 तत्वों का बनाया हुआ शरीर को भी पूजते रहते हैं। सन्यासियों का शरीर किससे बनता है? विकार से। तमोप्रधान तत्वों से बना हुआ मिलता है। तो गोया तमोप्रधान भूतों की पूजा करते हैं; परन्तु इन बातों को कोई समझते थोड़े ही हैं। भल यहाँ भी बैठे हैं; परन्तु बुद्धियोग कहाँ2 भटकता रहता है। यहाँ तो तुम बच्चों को आँखें बन्द कर शिवबाबा को याद नहीं करना है। जानते हो बाप बहुत2 दूर देश के रहने वाले हैं। वह आकर बच्चों को श्रीमत देते हैं। श्रीमत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ देवता बनेंगे। देवताओं की सारी राजधानी बनेगी ना। तुम यहाँ बैठे अपना देवी देवताओं का राज्य स्थापन कर रहे हो। पहले तुमको पता थोड़े ही था। वह कैसे स्थापन हुआ था। अभी जानते हो। बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर बन पढ़ाते भी हैं और फिर साथ में भी ले जावेंगे। सद्गति करेंगे। गुरु लोग किसकी गति सद्गति नहीं करते हैं। यहाँ तुमको समझाया जाता है एक ही बाप, टीचर, गुरु है। बाप से वरसा मिलता है। गुरु पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले जावेंगे। इन सभी बातों को बूढ़ी माताएँ तो समझ नहीं सकती हैं। उन्हों के लिए मुख्य बात है अपन को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करना है। हम शिवबाबा के बच्चे हैं, शिवबाबा हमको स्वर्ग का वरसा देंगे। बूढ़ी2 माताओं को फिर ऐसी2 तोतली भाषा में फिर समझाना चाहिए। यह तो हरेक आत्मा का हक है बाप से वरसा लेना। मौत समाने खड़ा है। पुरानी दुनिया सो फिर नई जरूर बननी है। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई बनती है। घर को बनने में कितने थोड़े महीने लगते हैं। फिर पुराना होने में तो 100 वर्ष लग जाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो यह पुरानी दुनिया अभी खलास होनी है। यह लड़ाई जो अब लगती है फिर वह 5000 वर्ष बाद लगेगी। यह सभी बात बूढ़ियाँ तो समझ नहीं सकती हैं। यह फिर बड़ों का काम है उनको समझाना। उनके लिए तो एक अक्षर भी काफी है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम आत्मा परमधाम में रहने वाली हो। यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाते हो। आत्मा यहाँ दुख और सुख का पार्ट बजाती है। मूल बात बाप कहते हैं शिवबाबा को याद करो, सुखधाम को याद करो। बाप को याद करने से पाप कट जावेंगे। और फिर स्वर्ग में आ जावेंगे। अभी जितना जो याद करेंगे उतना पाप कटेंगे। बूढ़ियाँ तो हिरी हुई हैं सतसंगों आदि में जाकर कथा सुनती हैं। उन्हों को फिर घड़ी2 बाप की याद दिलानी चाहिए। स्कूल में पढ़ाई होती है। कथा नहीं सुनी जाती है। भक्तिमार्ग में तुमने यह बहुत ही ढेर कथाएँ आदि सुनी हैं; परन्तु उनसे कुछ भी फायदा नहीं होता है। छी–छी दुनिया से नई दुनिया में तो जा नहीं सकते। कोई भी विद्वान पंडित आचार्य यह कोई के ख्याल में नहीं आता कि सुखधाम शान्तिधाम किस वस्तु का नाम

है। आगे तुम भी नहीं जानते थे। बड़े2 चिनमयानन्द, सुधानन्द सुखधाम–दुखधाम को थोड़े ही जानते हैं। सुखधाम को तो वह देखते भी नहीं हैं। वह तो कह देते सुख काग विष्टा समान सुख है। तो किसको वह रास्ता थोड़े ही बतावेंगे। तुम समझाते हो फिर भी कुम्भकरण के नींद में सोये रहते हैं। सन्यासी क्या जाने सुखधाम शान्तिधाम से। शान्तिधाम का भी उन्हों को पता नहीं है। वह तो कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावें। सुख का भी उन्हों को पता नहीं है। बाप कहते हैं शांतिदेवा.....परन्तु शान्ति किस चीज़ का नाम है वह जानते ही नहीं। कुछ भी नहीं जानते। न रचयिता बाप को न रचना को जानते हैं। नेती2 कह देते हैं। तुम भी आगे नहीं जानते थे। भक्तिमार्ग को तो अच्छी रीत जानते थे। घर में भी बहुतों के पास मूर्तियाँ होती हैं। चीज़ वही है। कोई पति लोग भी स्त्री को कहते हैं तुम घर में मूर्ति की बैठ पूजा करो। बाहर में धक्का खाने क्यों जाती हो; परन्तु उन्हों की भावना रहती है। अभी तुम समझते हो तीर्थ यात्रा करना माना भक्तिमार्ग के धक्के खाने हैं। अनेक बार अनगिनत बार तुमने 84 का चक्र खाया है। सतयुग त्रेता में तो कोई यात्रा होती ही नहीं। वहाँ कोई मंदिर आदि होता ही नहीं। यह यात्राएँ आदि सभी भक्तिमार्ग में ही होती हैं। ज्ञानमार्ग में यह कुछ भी नहीं होता। उनको कहा जाता है भक्ति। ज्ञान देने वाला तो एक बाप के सिवाय दूसरा कोई है नहीं। वही ज्ञान का सागर है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। सद्गति दाता एक ही बाप है। श्री श्री शिवबाबा ही कहते हैं। उनको टाइटिल की दरकार नहीं। यह तो बड़ाई करते हैं। उनको तो कहते ही हैं शिवबाबा। तुम बुलाते भी हो शिवबाबा हम पतित बन गये हैं। हमको आकर पावन बनाओ। भक्तिमार्ग के दुबण में गले तक फँसे पड़े हैं। फँसकर फिर चिल्लाते हैं। विषय वासना के दुबण से एकदम फँस पड़ते हैं। सीढ़ी नीचे उतरते2 फिर फँस पड़ते हैं गटर में। कोई को भी पता नहीं पड़ता। तब बाबा को कहते हैं आकर हमको दुबण से निकालो। बाप को भी ड्रामा अनुसार आना ही पड़ता है। बाप कहते हैं मैं बन्धायमान हूँ इन सभी को दुबण से निकालने। इनको कहा जाता है कुम्भी पाक नर्क। रौरव नर्क भी कहते हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। उनको पता थोड़े ही पड़ता है। तुम बाप को देखो निमंत्रण कैसा देते हो। निमंत्रण तो कोई शादी मुरादी आदि पर दिया जाता है। तुम तो कहते हो हे पतित पावन आओ। इस पतित दुनिया, रावण की पराई देश में आओ। हम गले तक इसमें फँस पड़े हैं। सिवाय बाप के और तो कोई निकाल न सके। कहते भी हैं दूर देश के रहने वाला शिवबाबा। यह रावण का देश है। सभी की आत्मा तमोप्रधान हो गई है। इसलिए बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ। पतित–पावन सीता रा.....ऐसे कह सभी चिल्लाते रहते हैं। सन्यासी लोग भी ऐसे बैठ गाते रहते हैं। ऐसे नहीं कि वह पवित्र रहते हैं। यह दुनिया ही पतित है ना। रावण राज्य है। इनमें तुम फँस पड़े हो। फिर भी निमंत्रण दिया है बाबा आकर हमको कुम्भी पाक नर्क से निकालो। तो बाप आये हैं। कितना तुम्हारा ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। तुम काम चिक्षा पर जल मरे हो। अभी बुलाते हो बाबा आओ इस दुखधाम के गटर से निकालो। बाप कहते हैं तुम भी तमोप्रधान थे ना। मुझे पत्थर भित्तर में कहते थे। गालियाँ देते थे कच्छ मच्छ अवतार, बराहअवतार। कितनी गाली देते थे। याद है? यह भी खेल है। कितना अपकार करते हो। बाप फिर भी आकर उपकार करते हैं। तुम पूज्य सो देवता थे। फिर पतित बनते हो तो गालियाँ देते हो। कण2 में परमात्मा कह देते, कितनी कड़ी गाली है। आधा कल्प गर्भ जेल में भी सज़ाएँ भोगी हैं। दुख भी भोगे हैं। आयु भी छोटी। अकाले मृत्यु होता आया है। ड्रामा में अपार दुख तुम बच्चों ने देखी है। टाइम वेस्ट होता जाता है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। पुजारी बन कितनी गालियाँ दी हैं। अभी तुमको क्या कहें? उल्लू पाजी कहें। सिकल मनुष्य जैसी थी सीरत बन्दर मिसल थी। अभी मैं आकर तुमको इन ल0ना0 जैसा बनाता हूँ। फिर तुम आधा कल्प राज्य करेंगे। स्मृति में लाओ। अभी टाइम बहुत ही थोड़ा है। मौत शुरू हो जावेगा तो फिर मनुष्य वैरागी हो जावेंगे। 3/4 वर्ष में क्या हो जावेगा। कई तो ठका सुनकर ही हार्टफेल हो जावेंगे। मरेंगे ऐसे जो बात मत पूछो। बूढ़ियाँ देखो कितनी आई हैं। बिचारी कुछ भी समझ न सके। जैसे तीर्थों पर जाते हैं ना तो एक/दो को देख तैयार हो जाते हैं। हम भी चलते हैं। अभी तुम समझते हो

भक्तिमार्ग की तीर्थ यात्रा का अर्थ ही है सीढ़ी नीचे उतरना। तमोप्रधान बनना। बड़ी ते बड़ी यात्रा तुम्हारी यह है। जो तुम पतित दुनिया से पावन दुनिया में जाते हो। तो इन बच्चों को कुछ न कुछ शिवबाबा की याद दिलाते रहो। ऊँच पद तो पा न सके। बाकी हाँ, स्वर्ग में आवेंगे। शिवबाबा का नाम याद है, थोड़ा बहुत सुनते हैं तो स्वर्ग में आवेंगे। यह फिर जरूर मिलना है। बाकी पद तो है पढ़ाई से। उसमें बहुत फर्क पड़ जाता है। ऊँच ते ऊँच फिर कम से कम। रात–दिन का फर्क पड़ जाता है। कहाँ प्राइम मिनिस्टर, प्रजीडेन्ट कहाँ नौकर–चाकर, मेहतर आदि। राजधानी में तो नम्बरवार होते हैं ना। स्वर्ग में भी राजधानी होगी; परन्तु वहाँ पापात्माएँ गंदे विकारी नहीं होंगे। वह है ही निर्विकारी दुनिया। तुम कहेंगे हम यह ल0ना0 जरूर बनेंगे। तुमको हाथ उठाते देख बूढ़ियाँ आदि भी हाथ उठा लेंगी। समझती कुछ भी नहीं हैं। फिर बाप के पास आये हैं तो स्वर्ग में तो जावेंगे ही; परन्तु सभी ऐसे थोड़े ही बनेंगे। बाप कहते हैं मैं गरीब निवाज हूँ। बाबा तो गरीबों को देख खुश होते हैं। भल कितने भी बड़े ते बड़े साहूकार पदमपति है उनसे भी यह ऊँच पद पावेंगे 21 जन्मों के लिए। यह भी अच्छा है। बूढ़ियाँ जब आती हैं तो बाप को खुशी होती है। फिर भी श्रीकृष्ण पुरी में तो जावेंगी ना। यह तो है रावण पुरी। जो अच्छी तरह पढ़ेंगे तो कृष्ण को भी गोद में झुलावेंगे करेंगे। प्रजा थोड़े ही अन्दर आ सकेगी। वह तो कब करके दीदार करेंगे। जैसे पोप दीदार कराते हैं ना खरके से। लाखों आकर इकट्ठे होते हैं दर्शन करने। तुम कहेंगे वह तो पतित हैं। पतित का पतित दीदार कर क्या करेंगे। एवर पावन तो एक बाप ही है जो तुमको एवर पावन आकर बनाते हैं। सारे विश्व को सतोप्रधान बनाते हैं। वहाँ यह 5 भूत रहेंगे नहीं। 5तत्व भी सतो० बन जाते हैं। तुम्हारे गुलाम बन जाते हैं। कब भी ऐसी गर्मी न होगी जो नुकसान हो जाये। 5तत्व भी कायदे अनुसार चलते हैं। अकाले मृत्यु नहीं होती। अभी तुम स्वर्ग में चलते हो तो नर्क को बुद्धि से भूल जाना चाहिए। जैसे नया मकान बनाते हैं तो पुराने से भी बुद्धि हट जाती है ना। बुद्धि जैसे नया मकान में ही चली जाती है (य)ह फिर है बेहद की बात। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। पुरानी दुनिया का विनाश होना है। तुम हो नई दुनिया स्वर्ग बनाने वाले। तुम बहुत अच्छा कारीगर हो। अपने लिए स्वर्ग बना रहे हो। कितने बड़े अच्छे कारीगर हो। अपने लिए नई दुनिया स्वर्ग बना रहे हो याद की यात्रा से। थोड़ा भी याद करो तो तुम स्वर्ग में आ जावेंगे। जैसे कोई ... सोण कराते हैं ना। थोड़ा भी याद किया तो वह भी मदद की स्वर्ग बनने की। तुम गुप्त वेष में अपना स्वर्ग बना रहे हो। जानते हो हम इस शरीर को छोड़ फिर जाकर स्वर्ग में निवास करेंगे। तो ऐसे बेहद के बाप को भूलना न चाहिए। अभी तो तुम स्वर्ग में जाने लिए पढ़ रहे हो। अपनी राजधानी स्थापन करने मेहनत कर रहे हो। यह रावण की राजधानी ही खलास हो जानी है। तुम कहेंगे हम श्रीमत पर स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं। अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। हमने यह स्वर्ग तो अनेक बार बनाया है। राजाई ली है फिर गंवाई है। यह भी याद करो तो बहुत अच्छा। हम स्वर्ग के मालिक थे। बाप ने हमको ऐसा बनाया था। बाप को याद करो तो भी तुम्हारे पाप भस्म होंगे। कितना सहज रीति तुम स्वर्ग स्थापन करते हो। कोई मिट्टी, ईंट आदि उठानी पड़ती है? कुछ भी नहीं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। पुरानी दुनिया के विनाश के लिए कितनी चीज़ें निकलती रहती हैं। कुदरती आपदाएँ, मूसलों आदि द्वारा सारी पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगी। अभी बाप आये हैं हमको श्रेष्ठ मत देने। श्रेष्ठ स्वर्ग की स्थापना करने। उसमें फिर हम पवित्र देवताएँ ही राज्य करेंगे। अनेक बार तुमने यह स्थापन की है। तो बुद्धि में याद रखना चाहिए ना। अनेक बार राज्य लिया है और गंवाया है। यह ही बुद्धि में चलता रहे। एक/दो को यह बातें सुनाओ। दुनियावी बातों में समय न गंवाना चाहिए। बाप को याद करो। स्वदर्शनचक्रधारी बनो। यहाँ बच्चों को अच्छी रीत सुनकर फिर उगारना। सिमरण करना है। बाबा ने क्या सुनाया। शिवबाबा और वरसे को तो जरूर याद करना चाहिए। बाप तीरी पर बहिश्त ले आते हैं। पवित्र भी बनना है। पवित्र न बनेंगे तो सज़ा खानी पड़ेगी। बहुत छोटा पद पा लेंगे। स्वर्ग में ... ऊँच पद पाना है तो अच्छी रीत धारणा करो। बाप रास्ता तो बहुत सहज बताते हैं। अच्छा गुडमॉर्निंग।